श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

श्री शत्रुंजय-मुक्ति
सा विद्या या विमुक्तये
सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

C/o. शाह गोविन्दजी वीरम फेक्टरी कम्पाउन्ड, मोंढा रोड, औरंगाबाद (महा.) ४३१ ००१

सम्यग्ज्ञान परिचय Answer-Sheet

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

शहर

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	भद्रशाल
(२)	जातिनामकर्म
(३)	अभिनय
(४)	आजीविका
(५)	वैरवृत्ति
(६)	भावेन्द्रिय
(७)	शुद्रजाति
(८)	धर्ममार्ग
(९)	वैताढ्यपर्वत
(१०)	अवयव
(११)	कटिप्रदेश
(१२)	ऋणमोचन
(१३)	निर्लांछन
(१४)	स्फटिक
(१५)	धर्म
(१६)	कर्मादान
(१७)	ऋषभकूट
(१८)	कुवाणिज्य
(१९)	संघातन
(२०)	कार्मण शरिर

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	मिथिला
(२)	साधार्मिक
(३)	उपांग
(४)	श्रेणी
(५)	अग्नि
(६)	भक्तिभाव
(७)	शरीर
(८)	असतीपोषणकर्म
(९)	अंकपितस्वामी
(१०)	चक्षुरिन्द्रिय
(११)	कर्मादान मे
(१२)	औदारिकशरिर
(१३)	पैसा, लक्ष्मी
(१४)	भूमिकूट
(१५)	मागध
(५)	योग होने से
(६)	वेगसे, शीघ्र
(७)	औदारिक वर्गणा
(८)	एक सौ दो
(९)	हर्षित होकर
(१०)	प्रकार
(११)	ऋषभकूट
(१२)	जाति
(१३)	एकत्रित हुए
(१४)	व्यापार
(१५)	हर्षित होकर
(१६)	औदारिक
(१७)	शकट
(१८)	जोडना , च
(१९)	मिश्रमोहनीय
(२०)	प्रदक्षिणा देकर

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	परलोक
(२)	उपांग
(३)	मनोहर तिलक
(४)	विद्याधर

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	७	(६)	2
(२)	90	(७)	५
(३)	६	(८)	४
(४)	८	(९)	3
(५)	९	(१०)	९

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	132
(२)	१५८
(३)	४८
(४)	७
(५)	५
(६)	८
(७)	300000
(८)	७८ वर्ष
(९)	2
(१०)	९

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	93
(२)	×	(२)	23
(३)	×	(३)	९६
(४)	×	(४)	५
(५)	✓	(५)	९
(६)	✓	(६)	29
(७)	×	(७)	90
(८)	×	(८)	92
(९)	✓	(९)	८
(१०)	×	(१०)	20

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ____________________ जांचनेवाले की सही ____________________

प्रश्न - ८

१. जाति नामकर्म को संक्षिप्त में समझाइये → जाति नामकर्म किसी भी जीव को इंद्रिय प्रदान नहीं करता। जाति नामकर्म का अर्थ समूह वर्ग से है ना कि इंद्रियाँ प्रदान करने वाले कर्म से। सभी जीवों को मिलने वाली इंद्रियाँ तो शरीर नामकर्म, अंगोपांग नामकर्म इंद्रिय पर्याप्ति नामकर्म की सहायता से होती है। भावेन्द्रिय आत्मा का गुण होने से ज्ञानावरणीय एवं दर्शनावरणीय (मतिज्ञान) के क्षयोपशम से होता है।

२. प्रभुवीर ने अकंपित पंडित की शंका का समाधान कैसे किया → "नहवे प्रेत्य नरके नारका सन्ति" इन वेदपदों का अर्थ ऐसा है की परलोक में नरक तथा नारकी नहीं है, यानि की परलोक में नारकी जीव शाश्वत नहीं है, अर्थात जो उत्कृष्ट पाप करते हैं वो नारकी होते हैं, परंतु वे वहां पर शाश्वत रहते नहीं हैं। नरक का आयुष्य पूर्ण होने पर वहां से दूसरी गति में जाते हैं, परंतु नारकी जीव मरकर दूसरे ही भव में नारकी होते नहीं हैं। यानी नारकी तुरंत बाद के परलोक में वो नारकी होते नहीं हैं, पर दूसरे भव में जाते हैं इससे तुझे नारकी का अभाव समझना नहीं, इस तरह से वीरप्रभु के वचन सुनकर अकंपित पंडित की शंका का समाधान हुआ।

३. कर्मादान के बारे में समझाइये → वास्तव में श्रावक कर्मादान का त्यागी ही होता है, कारण कर्मादान से कर्मों का बहुत ही बड़ा जत्था आत्मा में प्रवेश करता है, कर्मादान से बहुत सारे जीवों के घात का निमित्त बनते हैं। भवो भव में अनार्य देश में, पैसा कमाने की लालच से इन जीव ने अनेक बार कर्मादान में उद्यम किया है, इससे चार गतिमय संसार में अनेक बार इस जीव ने परिभ्रमण किया है, फिर भी इसका अंत आया नहीं है, अब यदि इस दुःखमय संसार में से बाहर निकलना हो तो हमें समझकर सावद्य और इसमें भी सविशेष कर्म के कारणभूत कर्मादान का अवश्य त्याग करने के भावरखना चाहिए।

४. उत्तम लेनदार कैसा होना चाहिये → लेनदार को जब ख्याल आता है कि इस कर्जदार के पास देने के लिये बिलकुल द्रव्य रहा नहीं है, तब उसे छोड़ देना चाहिये, दरिद्री को बिना वजह क्लेश अथवा पापवृद्धि के पाप में डालने से दोनों को कोई फायदा नहीं है, तब उसे छोड़ ही देना चाहिये। उत्तम लेनदार तो उसके पास जाकर कहता है कि "भाई! जब तुझे मिले तब देना और यदि न चुका सको तो ऐसा जानना कि मैंने धर्म के लिये दिया था" ऐसा कहकर कर्ज छोड़ देना चाहिये पर बहुत समय तक ऋणसंबंध नहीं रखना चाहिये। ऋणसंबंध छोड़ ना दे और दोनों में से एक का आयुष्य पूरा हुआ तो भवांतर में दोनों में वैरवृद्धि होगी।

५. विद्याधर मनुष्यों की श्रेणियों का वर्णन संक्षिप्त में कीजिये → हर वैताढ्य पर्वत की रचना ऐसी है की वैताढ्य पर्वत पर दस योजन जाने के बाद १० योजन चौड़ी और उत्तर दक्षिण दिशाओं में वैताढ्य पर्वत जितनी ही लंबी दो मेखलाएँ आती हैं। मेखला यानि सपाट प्रदेश, एक उत्तर तरफ दूसरी दक्षिण की ओर। उत्तर की ओर के मेखला पर रथनुपूर आदि ६० शहर हैं। दक्षिण की ओर गगनवल्लभ आदि ५० शहर हैं। यह भरतक्षेत्र में है। ऐरावत क्षेत्र में उत्तर की मेखला पर ५० और ६० शहर हैं। जब कि महाविदेह क्षेत्र में दोनों ओर ५५-५५ शहर हैं। इस तरह ३४ वैताढ्य पर ६८ विद्याधर मनुष्यों की श्रेणियाँ हैं।